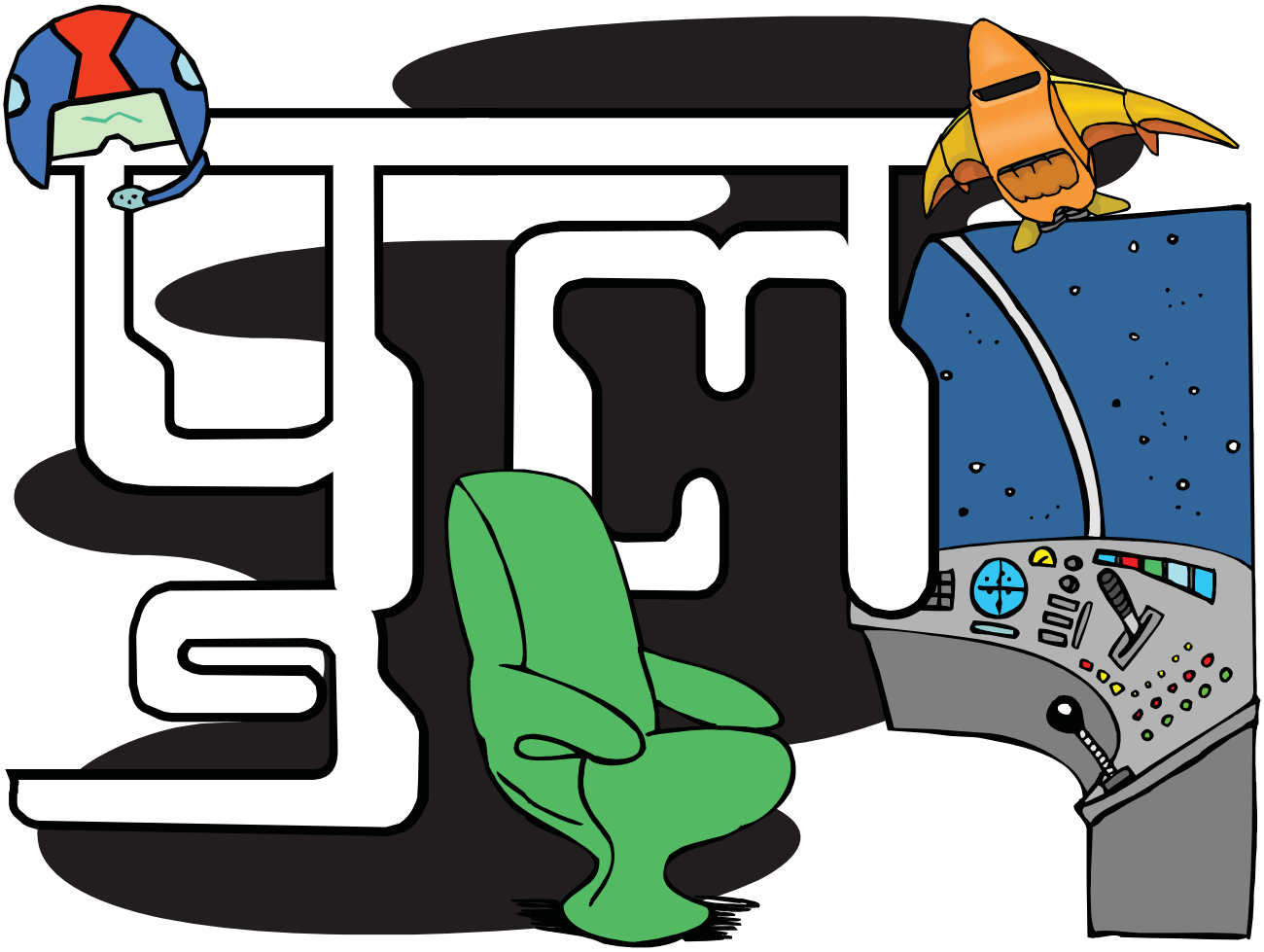

गेलैक्सी एक्सप्रेस

वेकेशन या अवकाशीय बाइबल स्कूल

मुख्य अध्याय की पुस्तिका

नेविगेशन पैनल

आम अवलोकन

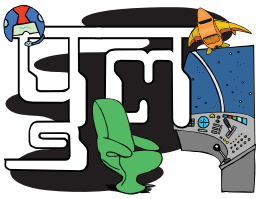

परमेश्वर को पुकारें मूसा का जन्म परमेश्वर महान है	पाठ के दौरान जब भी विद्यार्थी ''परमेश्वर को पुकारें '' सुनेंगे, तब विद्यार्थियों को अपने दोनों हाथों को परमेश्वर की ओर उठाते हुए और कूदते हुए यह प्रतिक्रिया करनी होगी ''प्रभु, हमारी मदद करो!''	भजन संहिता 3:4 मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूं, और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है।
परमेश्वर से प्रतिक्रिया करें मूसा और जलती हुई झाड़ी परमेश्वर अविश्वसनीय है	इस पाठ के दौरान, जब कभी बच्चे यह सुनते हैं ''परमेश्वर से प्रतिक्रिया करें'' तो उन्हें अपने हाथ कान पर रखते हुए 'हां प्रभु!'' कहते हुए प्रतिक्रिया करने दो' अगला, अपने पैरों को एक सैनिक की तरह पटकते हुए बोलने दो ''मैं यहां हूं!''	यशायाह 6:8 ''मैं किस को भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा?'' तब मैं ने कहा, ''मैं यहां हूं! मुझे भेज!''
परमेश्वर की आज्ञा मानें मिस्त्र में विपत्तियां परमेश्वर अनोखा है	इस पाठ के दौरान, जब भी विद्यार्थी ''परमेश्वर की आज्ञा मानें'' सुनते हैं, तब उन्हें खड़े होना है और अपने आसपास चलते हुए, दूसरे विद्यार्थियों से अपनी सीट बदलनी होगी, और ''मुझे बढ़ते रहना होगा'' कहते हुए प्रतिक्रिया करें।	1 यूहन्ना 3:24 और जो उस की आज्ञाओं को मानता है, वह इस में, और यह उस में बना रहता है: और इसी से, अर्थात उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है।
परमेश्वर पर आशा रखें दिन में बादल और रात में आग का खम्भा परमेश्वर चमत्कारी है	इस पाठ के दौरान, जब भी विद्यार्थी ''परमेश्वर पर आशा रखें'' सुनते हैं, तब उन्हें कूदना है और अपने हाथों से बोक्सिंग करनी होगी, और फिर कहना होगा कि ''मैं तैयार हूँ'', उसके बाद अपने दोनों हाथों को जोड़कर ''पर मुझे इंतजार करना होगा'' कहते हुए बैठ जाएं।	यशायाह 30:18 क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है; क्या ही धन्य हैं वे जो उस पर आशा लगाए रहते हैं!
परमेश्वर की आराधना करें लाल समुद्र को पार करना परमेश्वर अद्वैत है	इस पाठ के दौरान, जब भी विद्यार्थी ''परमेश्वर की आराधना करें'' सुनते हैं, तब विद्यार्थियों को अपने हाथों को आकाश की ओर उठाकर ''मैं आपकी आराधना करता हूँ'' कहते हुए आगे पीछे अपने हाथों को हिलाते हुए प्रतिक्रिया करनी होगी।	भजन संहिता 150:1 याह की स्तुति करो! ईश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो; उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसी की स्तुति करो!

India.ChildrenAreImportant.com – Children's ministry resources, Sunday School, and Vacation Bible School (VBS) curriculum for churches and teachers - Hindi.

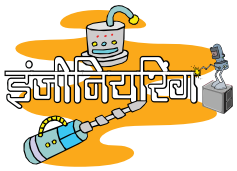

रोबोट

दूरबीन

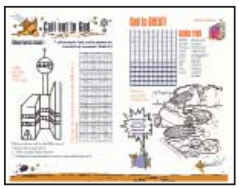

मूसा एक टोकरी में

एक शब्द बनायें

स्वाद की परीक्षा

मूसा की जलती झाड़ी

आश्चर्यजनक आकार

जलती झाड़ी

पीने का रिलै दौड़

केला खाने की दौड़

विपत्तियां

गतिविधि

"अपने जूते उतारो"

नूडल होड़

एक पिरामिड बनाओ

बादल का खम्भा

अंतरिक्ष यान

गेलैक्सी एक्सप्रैस रॉकेट

अस्त व्यस्त मार्शमेलौ की बूंदे

केक रिलै

सूखी जमीन पर सागर पार

सूपर नोवा

लाल सागर पार करना

अस्त व्यस्त मार्शमेलौ की बूंदे

केक रिलै

India.ChildrenAreImportant.com – Children's ministry resources, Sunday School, and Vacation Bible School (VBS) curriculum for churches and teachers - Hindi.

1 पहली यात्रा
परमेश्वर को पुकारें

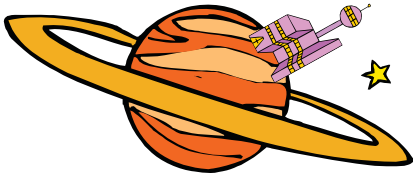

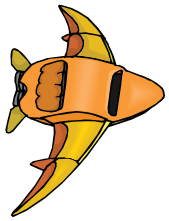

नया संदेश प्राप्त

(आयत)

भजन संहिता 3:4

मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूं, और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है।

मिशन कंट्रोल से जरूरी संदेश

मुख्य अध्याय

मूसा का जन्म

बहुत दिनों के बीतने पर मिस्त्र का राजा मर गया। और इस्त्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी लम्बी सांस लेकर आहें भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुंची। और परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उस ने इब्राहीम, और इसहाक, और याकूब के साथ बान्धी थी, स्मरण किया। और परमेश्वर ने इस्त्राएलियों पर दृष्टि करके उन पर चित्त लगाया। (निर्गमन 2:23-25)

निर्गमन के अध्याय 2 में बाइबल हमें दिखाता है कि परमेश्वर के लोगों ने एक महत्वपूर्ण पाठ सीखा था जो आज हम सीखेंगे। जब हमें किसी बात में सहायता की जरूरत होती है तब हमें परमेश्वर को पुकारने की आवश्यकता होती है!
इस्त्राएली लोग गुलामी में जी रहे थे और अपने जीवन में काफी समस्याओं का अनुभव कर रहे थे। कई गरीब लोग होते हैं, और बहुत थोड़ा ही भोजन उनके पास खाने को होता है। कई बार लगता है कि स्कूल में हमारा मजाक उड़ाया और अपमानित किया जा रहा है या हो सकता है कि हम किसी संघर्ष से गुजर रहे होंगे क्योंकि हमारे घर में मम्मी–पापा पूरे समय झगड़ते रहते होंगे। यह वही समय है जब हमें परमेश्वर को पुकारना है! उस समय में परमेश्वर के लोग न केवल गरीब और भूखे थे, बल्कि मिस्त्री लोग उनका मजाक उड़ाते और अपमानित किया करते थे। इन सारे दबावों के साथ साथ, वे आपस में भी लड़ते झगड़ते थे। जीवन काफी कठिन था। फिर मामले को और ज्यादा बिगाड़ते हुए, मिस्त्र के राजा ने घोषणा की कि इस्त्राएलियों के जितने लड़के पैदा हो उन्हें मार डाला जाए! वह बहुत ही भयंकर सताव था!!! यदि किसी को परमेश्वर को पुकारने की सबसे ज्यादा आवश्यकता थी, तो वे इस्त्राएली थे।

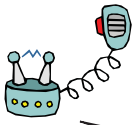

संदेश रिले

परमेश्वर को पुकारें

पाठ के दौरान जब भी विद्यार्थी ''परमेश्वर को पुकारें '' सुनेंगे, तब विद्यार्थियों को अपने दोनों हाथों को परमेश्वर की ओर उठाते हुए और कूदते हुए यह प्रतिक्रिया करनी होगी ''प्रभु, हमारी मदद करो!''

लेकिन परमेश्वर के पास एक योजना थी। जब मूसा पैदा हुआ तब परमेश्वर ने बहुत ध्यान से उसकी देखभाल की और उसे मार डाले जाने से बचाया। मूसा की माँ ने तब तक उसे छुपाये रखा जब तक वह उसे छुपा सकती थी उन बुरे सिपाहियों से जो उसे ले जाकर मार डालते। फिर वह समय आया जब वह उसे और ज्यादा अपने पास नहीं छुपा सकती थी। तब शायद उसे एक बहुत अच्छा विचार आया होगाः परमेश्वर को पुकारे! जब उसकी मां ने उसे एक टोकरी में रखकर नदी में छोड़ दिया तब भी परमेश्वर ने उसका ध्यान रखा। वह डूब सकता था या कहीं दूर बहकर जा सकता था, लेकिन परमेश्वर ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि वह बिल्कुल सुरक्षित रहे। वह नदी उस टोकरी को मिस्त्र के राजा के घर की तरफ ले गया जहां फिरौन की बेटी ने उसे अपने बेटे के रूप में अपना लिया। हमारा परमेश्वर बहुत महान है! मूसा के जीवन के लिए परमेश्वर की एक योजना थी और उसे तब भी देखा था जब वह शिशु टोकरी में रखा हुआ, नदी में बह रहा था। परमेश्वर आपको और मुझे भी देखते हैं और हम सबको पहचानते हैं।

आज हमने एक महत्वपूर्ण पाठ सीखा है कि परमेश्वर को पुकारें। मेरे और आपके लिए समय कठिन हो सकता है। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि स्कूल में हमें एक मुश्किल समय से गुजरना पड़ा हो या किसी भाई के साथ लड़ाई हुई हो। सबसे उत्तम काम जो आप कर सकते हो वह है परमेश्वर को पुकारें। इस्त्राएलियों ने भी बिल्कुल वही किया। उन्होंने परमेश्वर को पुकारा और बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने उनकी सुनी और उन्हें स्मरण किया। परमेश्वर ने उन्हें देखा और उन्हें जाना। परमेश्वर ने उन पर दया की और उन्हें छुड़ाया। परमेश्वर के पास मूसा के लिए पहले से ही एक योजना थी... इस्त्राएली के रूप में जन्म हुआ, मृत्यु से बचाया गया, एक टोकरी में रखकर बचाया गया, और फिरौन के परिवार में अपनाया गया। इसलिए आओ हम उस पर अमल करें जो आज हमने सीखा है और परमेश्वर को पुकारें!

खगोलीय निरीक्षण

परमेश्वर महान है

India.ChildrenAreImportant.com – Children's ministry resources, Sunday School, and Vacation Bible School (VBS) curriculum for churches and teachers - Hindi.

2 दूसरी यात्रा
परमेश्वर से प्रतिक्रिया करें

मिशन कंट्रोल से जरूरी संदेश

मुख्य अध्याय

मूसा और जलती हुई झाड़ी

मूसा अपने ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़– बकरियों को चराता था; और वह उन्हें जंगल की परली ओर होरेब नाम परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया। और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उस ने दृष्टि उठाकर देखा कि झाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती। तब मूसा ने सोचा, कि मैं उधर फिरके इस बड़े अचम्भे को देखूंगा, कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती। जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा, कि हे मूसा, हे मूसा। मूसा ने कहा, क्या आज्ञा। उस ने कहा इधर पास मत आ, और अपने पांवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है। फिर उस ने कहा, मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं। तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था अपना मुंह ढ़ाप लिया। (निर्गमन *3:1-6)*

हमारे परमेश्वर ने मूसा से बात करने में कितना अद्भुत तरीका अपनाया! यह वही कहानी है जिसके बारे में आज हम सीखेंगे। परमेश्वर मूसा को पुकारता है, और वह उसे उसके नाम से जानता था! आज हम सीख रहे हैं कि हम क्या कर सकते हैं जब परमेश्वर हमें पुकारता है, हमें परमेश्वर से प्रतिक्रिया करनी चाहिए!

मूसा अपने भेड़ों की रखवाली करते हुए अपने काम में लगा हुआ था। मूसा वहां पर प्रार्थना या अन्य कोई आत्मिक काम नहीं कर रहा था। अचानक, परमेश्वर उसे पुकारता है जबकि वह काम कर ही रहा था। परमेश्वर ने इस प्रकार नहीं कहा, ''अरे जो वहां काम कर रहा है इधर देखो'' लेकिन परमेश्वर ने मूसा को उसके नाम से पुकारा। पता नहीं कहां से लेकिन मूसा ने अपना नाम किसी को पुकारते सुना... ''मूसा, मूसा'' उसने इधर उधर यह देखने की जरूर कोशिश की होगी कि कौन उसे उसके नाम से पुकार रहा है। लेकिन उसके आस पास कोई नहीं था। फिर उसने देखा। वहां पर एक झाड़ी पर आग लगी हुई थी! क्या आपको लगता है कि उसने तुरंत आग बुझाने वाला यंत्र अपने बैग में से निकाला और उस आग को बुझाने लगा होगा? उसे देखकर वह तुरंत उस झाड़ी के पास गया होगा जब उसने देखा कि दरअसल वह झाड़ी जल नहीं रही थी। उस झाड़ी पर आग जरूर लगी थी, लेकिन वह जल नहीं रही थी! उसके बाद वह झाड़ी उससे बातें करने लगी! मूसा ने अवश्य सोचा होगा, ''क्या यह परमेश्वर है?'' और अगर है तो, ''क्या मुझे परमेश्वर से प्रतिक्रिया करनी चाहिए?''

आप और मैं आमतौर पर जलते हुए झाड़ियों को नहीं देखते, और परमेश्वर भी आमतौर पर सुनाई देने वाली आवाज़ में हमसे बातें नहीं करते, लेकिन परमेश्वर हर समय हमसे बातें करने की कोशिश करते रहते हैं। परमेश्वर हमेशा आपसे बात करने, आपके साथ समय बिताने और आपको सही मार्गदर्शन देने की कोशिश करते रहते हैं। लेकिन वास्तव में हममें से कुछ ही लोग उनकी आवाज़ को सुन पाते हैं। ज्यादातर लोग परमेश्वर को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। वे भूल जाते हैं कि परमेश्वर जिंदा है और हमसे बातें करना चाहते हैं! परमेश्वर वास्तव में यह आशा करते हैं कि आप परमेश्वर से प्रतिक्रिया करेंगे! क्या सचमुच हमारा परमेश्वर अद्भुत नहीं है?

मूसा भी परमेश्वर को नज़रअंदाज़ करने का चुनाव कर सकता था जैसे हम करते हैं, लेकिन वह रूका और सुनने लगा। फिर उसने अपना हृदय और मुंह को प्रतिक्रिया करने के लिए खोला। उसने इन शब्दों के साथ परमेश्वर को उत्तर दिया, ''हां परमेश्वर, मैं यहां हूं''। परमेश्वर के पास इस्त्राएलियों को गुलामी से छुड़ाने के लिए एक योजना थी। वह मूसा को इस्तेमाल करना चाहता था। मूसा ने परमेश्वर की आवाज़ का उत्तर दिया जब उसने वे सरल शब्द कहे, कोई बनावटीपन नहीं, केवल यहः ''मैं यहां हूं''। परमेश्वर आपके जीवन के द्वारा भी अद्भुत काम करना चाहते हैं! उनके पास आपके लिए महान और अद्भुत योजनाएं है, लेकिन वह चाहता है कि आप रूकें और उनकी आवाज़ को सुनें। परमेश्वर चाहते हैं कि आप परमेश्वर से प्रतिक्रिया करें!

नया संदेश प्राप्त

(आयत)

यशायाह 6:8

''मैं किस को भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा?'' तब मैं ने कहा, ''मैं यहां हूं! मुझे भेज!''

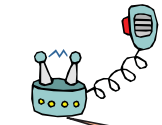

संदेश रिले

परमेश्वर से प्रतिक्रिया करें

इस पाठ के दौरान, जब कभी बच्चे यह सुनते हैं ''परमेश्वर से प्रतिक्रिया करें'' तो उन्हें अपने हाथ कान पर रखते हुए 'हां प्रभु!'' कहते हुए प्रतिक्रिया करने दो' अगला, अपने पैरों को एक सैनिक की तरह पटकते हुए बोलने दो ''मैं यहां हूं!''

खगोलीय निरीक्षण

परमेश्वर अविश्वसनीय है

India.ChildrenAreImportant.com – Children's ministry resources, Sunday School, and Vacation Bible School (VBS) curriculum for churches and teachers - Hindi.

3 तीसरी यात्रा
परमेश्वर की आज्ञा मानें

मिशन कंट्रोल से जरूरी संदेश
मिश्र में विपत्तियां

मुख्य अध्याय

"सो अब सुन, इस्त्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है, और मिस्त्रियों का उन पर अन्धेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है, इसलिये आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्त्राएली प्रजा को मिस्त्र से निकाल ले आए। अब जा, मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊंगा।" लेकिन मूसा ने कहा, " हे मेरे प्रभु, कृपया किसी और को तू भेज।" तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का...
तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा और उस से कहा, मुझे विदा कर, कि मैं मिस्त्र में रहनेवाले अपने भाइयों के पास जाकर देखूं कि वे अब तक जीवित हैं वा नहीं। यित्रो ने कहा, "कुशल से जा।" (निर्गमन 3:9-10, 4:12-18)

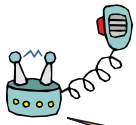

आज्ञा मानना एक बहुत ही मुश्किल काम है। कोई भी आज्ञा मानना नहीं चाहता। कोई नहीं चाहता कि जो काम वह कर रहा है उसे रोके और किसी और की बात मानें। विशेष रूप से परमेश्वर की आज्ञा मानना और भी कठिन होता है क्योंकि वास्तव में हम उन्हें देख नहीं सकते, और हम ऐसा दिखावा करने की कोशिश करते हैं कि कोई परमेश्वर नहीं है इसलिए उनकी बात मानने की आवश्यकता नहीं है। हर कोई अपने मन की बात करना चाहता है। यदि आप अपने माता–पिता की आज्ञा नहीं मानते, तो क्या आपको पता है, आप अकेले नहीं है! सारी मानवजाति इसी तरह से पैदा हुई है। हम कोई उन छोटे प्यारे प्राणियों की तरह पैदा नहीं हुए जैसे शायद आप सोचते हो। हम सभी स्वार्थ के साथ पैदा हुए है, और सोचते हैं कि सारी दुनिया हमारे चारों तरफ घूम रही है। कई बार जब हमें लगता है कि हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए लेकिन हम मानना नहीं चाहते, हम किसी तरह उस बात से बच निकलने का उपाय ढूंढते रहते हैं। खैर, यही बात मूसा के साथ भी हुई।

परमेश्वर के पास अपने लोगों को गुलामी और सताव से छुड़ाने के लिये एक बहुत ही अनोखी योजना थी। अपने लोगों को छुड़ाते समय वह अपनी महिमा और महानता को भी उसी समय प्रकट करना चाहता था। परमेश्वर ने फैसला किया कि जब तक कि मिस्त्री उन लोगों को जाने देने का निर्णय नहीं ले लेते और परमेश्वर की जीत नहीं हो जाती तब तक वह विपत्तियों, महामारियों और समस्याओं की एक श्रृंखला का इस्तेमाल करते रहेंगे और हर विपत्ती पहले से भी अधिक भयानक होती रहेगी। परमेश्वर चाहते थे कि मूसा ही वह व्यक्ति हो जो फिरौन से बातें करें। मूसा परमेश्वर का जन था, लेकिन मूसा आज्ञा मानना नहीं चाहता था। मूसा जाना नहीं चाहता था।

मूसा गिड़गिडाता और बहाने करता रहा कि वह लोगों के सामने बोलने लायक एक अच्छा वक्ता नहीं है और परमेश्वर के लिए अच्छा है कि वह किसी और को ढूंढे। मूसा परमेश्वर से किसी और को भेजने की मांग करता है!!! क्या आपने कभी अपनी मम्मी से आपको कहीं भेजने या कुछ करने से मना करने के लिए जिद किया है? तब आप भी समझ सकोगे कि मूसा ने कैसा महसूस किया होगा। परमेश्वर के पास एक बड़ी योजना थी और मूसा के लिए यह आवश्यक था कि वह परमेश्वर की आज्ञा मानें। परमेश्वर उन सारे बहानों को सुनकर और बच निकलने के प्रयास को देखकर थक चुका था। बाइबल बताती है कि परमेश्वर मूसा पर क्रोधित हुआ! परमेश्वर ने मूसा के साथ जाने और उसकी मदद के लिए एक अन्य व्यक्ति को भेजा। आपको क्या लगता है कि मूसा ने क्या किया होगा??? बिल्कुल सही, अंत में उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी!

परमेश्वर की योजना ने अपनी महिमा और आश्चर्यकर्म दिखानी आरंभ की जब मूसा की लाठी एक सर्प में बदल गयी और फिर वापस एक लाठी बन गयी। लेकिन फिरौन ने परमेश्वर के लोगों को छोड़ने से मना किया, इसलिए परमेश्वर ने विपत्तियाँ भेजी, और हर समय फिरौन को मन फिराने का अवसर दिया, लेकिन उसने मन नहीं फिराया। परमेश्वर ने तब एक के बाद एक विपत्तियाँ भेजीः लहू, मेंढ़क, कुटकियां, डांसों के झुण्ड, पशुओं की मृत्यु, फोड़े, ओले, टिड्डयां, अन्धकार और पहलौठों की मृत्यु। इन सबके बाद, फिरौन ने हार मान ली और परमेश्वर की जीत हुई! परमेश्वर के लोग अब जाने के लिए आज़ाद थे। और उन सबने परमेश्वर की महिमा को देखी!

यह सब इसलिए हुआ क्योंकि मूसा ने बहाना बनाना छोडा, खड़ा हुआ और परमेश्वर की आज्ञा मानकर वह गया!

नया संदेश प्राप्त
(आयत)

1 यूहन्ना 3:24

और जो उस की आज्ञाओं को मानता है, वह इस में, और यह उस में बना रहता है: और इसी से, अर्थात उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है।

संदेश रिलै
परमेश्वर की आज्ञा मानें

इस पाठ के दौरान, जब भी विद्यार्थी "परमेश्वर की आज्ञा मानें" सुनते हैं, तब उन्हें खड़े होना है और अपने आसपास चलते हुए, दूसरे विद्यार्थियों से अपनी सीट बदलनी होगी, और "मुझे बढ़ते रहना होगा" कहते हुए प्रतिक्रिया करें।

खगोलीय निरीक्षण
परमेश्वर अनोखा है

India.ChildrenAreImportant.com – Children's ministry resources, Sunday School, and Vacation Bible School (VBS) curriculum for churches and teachers - Hindi.

4 चौथी यात्रा
परमेश्वर पर आशा रखें

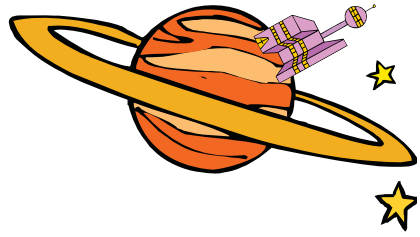

मिशन कंट्रोल से जरूरी संदेश

मुख्य अध्याय

दिन में बादल और रात में आग का खम्भा

जब फिरौन निकट आया, तब इस्त्राएलियों ने आंखे उठाकर क्या देखा, कि मिस्त्री हमारा पीछा किए चले आ रहे हैं; और इस्त्राएली अत्यन्त डर गए, और चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दी। और वे मूसा से कहने लगे, क्या मिस्त्र में कबरें न थीं जो तू हम को वहां से मरने के लिये जंगल में ले आया है ? तू ने हम से यह क्या किया, कि हम को मिस्त्र से निकाल लाया ? क्या हम तुझ से मिस्त्र में यही बात न कहते रहे, कि हमें रहने दे कि हम मिस्त्रियों की सेवा करें ? हमारे लिये जंगल में मरने से मिस्त्रियों की सेवा करनी अच्छी थी। मूसा ने लोगों से कहा, डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा; क्योंकि जिन मिस्त्रियों को तुम आज देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे। यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो।

(निर्गमन 14:10-14)

नया संदेश प्राप्त

(आयत)

यशायाह 30:18

क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है;
क्या ही धन्य हैं वे जो उस पर
आशा लगाए रहते हैं!

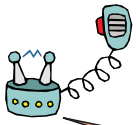

संदेश रिले

परमेश्वर पर आशा रखें

इस पाठ के दौरान, जब भी विद्यार्थी ''परमेश्वर पर आशा रखें'' सुनते हैं, तब उन्हें कूदना है और अपने हाथों से बोक्सिंग करनी होगी, और फिर कहना होगा कि ''मैं तैयार हूँ'', उसके बाद अपने दोनों हाथों को जोड़कर ''पर मुझे इंतजार करना होगा'' कहते हुए बैठ जाएं।

आज हम सीखने जा रहे हैं कि इस्त्राएलियों ने किस तरह परमेश्वर पर आशा रखना सीखा। मिस्त्रियों ने परमेश्वर के लोगों को जाने की अनुमति तो दी लेकिन तुरंत ही उन्हें इस बात का अफसोस हुआ। और उन्हें वापस गुलामी में लाने के लिये जल्द ही फिरौन उन लोगों का पीछा करने लगा। यह ऐसा होता कि गुलाम न बने रहने की जो बड़ी विजय उन्हें मिली थी वह उनसे छिन जाती। दुश्मन उनका पीछा कर रहे थे और वे डरे हुए थे। यहाँ तक कि, वे शिकायत करने लगे और सोचने लगे कि उन्हें वापस मिस्त्र में लौट जाना चाहिए। उन्होंने दरअसल सोचा कि उनके लिये स्वतंत्र रहने से बेहतर होगा कि वे वापस गुलामी में चले जायें क्योंकि उस मरूस्थल में उनके दुश्मन उनका पीछा कर रहे थे। आखिरी काम जो वे करना चाहते थे वह था कि वे परमेश्वर पर आशा रखें।

क्या यह विचित्र बात नहीं है कि लोग तब भी डरे हुए थे जबकि उन्होंने परमेश्वर की महिमा को देखा था जो उन्हें सुरक्षित रखे हुई थी? जब वे यात्रा कर रहे थे तब परमेश्वर ने इन लोगों के लिए बहुत आश्चर्यकर्म किए! परमेश्वर ने एक बहुत बड़े बादल के खम्भे को भेजा जो दिन में उनकी अगुवाई करता था, और आग के एक बड़े खम्भे को भेजा जो रात के समय उनको अगुवाई और रोशनी देता था! क्या आप कल्पना कर सकते हो कि लगभग दस लाख लोग एक मरूस्थल से जा रहे हैं और उनके सामने एक बादल का खम्भा भी चल रहा है? हम नहीं जानते कि वहाँ पर कुल कितने लोग थे, या वह खम्भा कितना ऊँचा था, लेकिन वहाँ पर एक बहुत बड़ी भीड़ थी और यकीनन् यह कोई छोटी सी मामूली मशाल नहीं थी। (विद्वानों ने गणना की है कि यदि वहां पर 600,000 पुरूष योद्धा थे, तो यकीनन् वहां पर बीस लाख से अधिक लोग रहे होंगे जिसमें स्त्रियां, बच्चे और बुजुर्ग लोग भी शामिल थे।) यह वास्तव में काफी आश्चर्यजनक और महान बात थी! जब वे यात्रा कर रहे थे तब परमेश्वर ने उन्हें उस बड़े अद्भुत चिन्ह के साथ अगुवाई की, लेकिन फिर भी वे डर गये जब उनके दुश्मन उनका पीछा कर रहे थे।

आप और मैं भी इस्त्राएलियों के समान अक्सर डर जाते हैं जब हम परमेश्वर की आज्ञा मानने की कोशिश करते हैं। कई बार हमारा आसपास का इलाका हमें एक मरूस्थल की तरह दिखने लगता है जहाँ मुडने के लिए कोई रास्ता नज़र नहीं आता और लगता है कि कोई दुश्मन हमारा पीछा कर रहा है। यद्यपि हमने परमेश्वर के आश्चर्यकर्म और महानता को देखा होगा, उसके चमत्कारों को अनुभव किया होगा, और उन अवसरों को याद भी किया कि परमेश्वर ने हमें किस प्रकार बचाया था, लेकिन जब हम डरे हुए होते हैं, तो परमेश्वर पर आशा रखना कठिन हो जाता है।

खगोलीय निरीक्षण

[परमेश्वर चमत्कारी है]

इस्त्राएलियों ने सोचा होगा कि उनके पास दो चुनाव हैः या तो भाग जाएं या उनसे लड़े। ऐसा विचार कभी उनके मन में नहीं आया होगा कि चुपचाप वहाँ बैठकर परमेश्वर पर आशा लगाएं। कौन इंतजार कर सकता है जब कोई बुरी बात घटने वाली होती है??? सभी जानते थे कि या तो उन्हें वहाँ से भागना होगा या लड़ना होगा, लेकिन परमेश्वर के पास एक योजना थी। मूसा ने परमेश्वर की योजना को सुनी और सबके साथ आकर बांटा... ''यहोवा आप ही तुम्हारे लिए लडेगा, इसलिए तुम चुपचाप रहो।'' परमेश्वर की योजना थी कि वह उनके लिए युद्ध करेगा, जबकि उन्हें केवल वहाँ पर परमेश्वर पर आशा रखनी थी!

आप में से कितने बैठकर इंतजार करना पसंद करेंगे? कोई भी नहीं! ये लोग भी समस्या में थे, जैसे कि आप और मैं अक्सर समस्याओं में पड़ जाते हैं। उनके लिए परमेश्वर की योजना केवल परमेश्वर पर आशा लगाना था और परमेश्वर उनके लिए लड़ा। अगली बार जब आप किसी समस्या में पडो, तो परमेश्वर से प्रार्थना करें और देखें कि क्या वह आपके लिए युद्ध करने आता है कि नहीं। आपका काम केवल उन इस्त्राएलियों के समान होगाः परमेश्वर पर आशा रखना।

India.ChildrenAreImportant.com – Children's ministry resources, Sunday School, and Vacation Bible School (VBS) curriculum for churches and teachers - Hindi.

5 पांचवीं यात्रा
परमेश्वर की आराधना करें

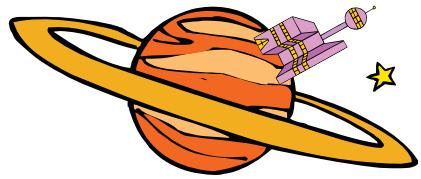

नया संदेश प्राप्त

(आयत)

भजन संहिता 150:1

याह की स्तुति करो! ईश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो; उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसी की स्तुति करो!

मिशन कंट्रोल से जरूरी संदेश

मुख्य अध्याय

लाल समुद्र को पार करना

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्त्रियों, और उनके रथों, और सवारों पर फिर बहने लगे। तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने बल पर आ गया; और मिस्त्री उलटे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उनको समुद्र के बीच ही में झटक दिया। और जल के पलटने से, जितने रथ और सवार इस्त्राएलियों के पीछे समुद्र में आए थे, सो सब वरन फिरौन की सारी सेना उस में डूब गई, और उस में से एक भी न बचा। परन्तु इस्त्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले गए, और जल उनकी दाहिनी और बाईं दोनों ओर दीवार का काम देता था। और यहोवा ने उस दिन इस्त्राएलियों को मिस्त्रियों के वश से इस प्रकार छुड़ाया; और इस्त्राएलियों ने मिस्त्रियों को समुद्र के तट पर मरे पड़े हुए देखा।

तब मूसा और इस्त्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्हों ने कहा, मैं यहोवा का गीत गाऊंगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उस ने समुद्र में डाल दिया है।।

यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है; मेरा ईश्वर वही है, मैं उसी की स्तुति करूंगा, (मैं उसके लिये निवासस्थान बनाऊंगा), मेरे पूर्वजों का परमेश्वर वही है, मैं उसको सराहूंगा। (निर्गमन 14:26-30, 15:1-2)

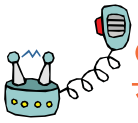

संदेश रिले

परमेश्वर की आराधना करें

इस पाठ के दौरान, जब भी विद्यार्थी ''परमेश्वर की आराधना करें'' सुनते हैं, तब विद्यार्थियों को अपने हाथों को आकाश की ओर उठाकर ''मैं आपकी आराधना करता हूँ'' कहते हुए आगे पीछे अपने हाथों को हिलाते हुए प्रतिक्रिया करनी होगी।

जब हमनें कल इस्त्राएलियों को छोड़ा था, तब वे बड़ी समस्या में थे और अपने दुश्मन के सामने थे जो उनका पीछा कर रहे थे। वे भागना या लड़ना चाहते थे, लेकिन उन्होंने परमेश्वर पर आशा रखने का चुनाव किया। उन्होंने अपने आप को दुश्मन सेना और विशाल ''लाल समुद्र'' के बीच फंसे हुए पाया। वे फंसे हुए थे और उन्हें छुड़ाने के लिए वे परमेश्वर पर आशा लगाए हुए थे, और परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाया!

आईए परमेश्वर की आराधना करें!

परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह अपनी लाठी को समुद्र की ओर बढ़ाकर पकड़े रहे और तुरंत ही पानी दो भागों में बंटने लगा! पूरा का पूरा विशाल समुद्र दो भाग होकर बंट गया और उनके लिए एक बढ़िया सूखा रास्ता बना दिया जिस पर चलके वे पार जा सकते थे! यह बाइबल के एक बहुत ही अद्‌भुत चमत्कारों में से एक है। समुद्र का बहाव रूक गया और दोनों ओर पानी एक दीवार के समान जम गया जबकि लगभग दस लाख से ज्यादा लोग उस रास्ते से होकर पार चले गये। फिर जब मिस्त्री लोगों ने उनका पीछा करना चाहा, तो परमेश्वर ने पानी को वापस उनके ऊपर बहा दिया और वे सभी डूब कर मर गये! यह एक उदाहरण है कि परमेश्वर आपके लिए युद्ध करता है! अब उन्हें और कुछ नहीं करना था केवल उस महान आश्चर्यकर्म के लिए परमेश्वर की आराधना करनी थी। क्या आप कल्पना कर सकते हो कि आप सूखी भूमि पर चलते हुए समुद्र को पार कर रहे हो और परमेश्वर आपके दुश्मन पर विजय पाते हुए देख रहे हो, वो भी ठीक आपके आँखों के सामने?

सबसे पहला काम जो उन्होंने किया वह था कि उन्होंने परमेश्वर के लिए गीत गाया और उनके आश्चर्यकर्मों और महानता के लिए परमेश्वर की आराधना की।

हमारा भी परमेश्वर और उनके किए हुए आश्चर्यकर्मों के प्रति पहली प्रतिक्रिया यही होनी चाहिए कि परमेश्वर की आराधना करें! जब आप स्कूल में किसी परीक्षा के लिए परमेश्वर की सहायता मांगते हुए प्रार्थना करते हो, और परमेश्वर आपकी मदद करते हैं तो आप वहाँ पर चुपचाप न बैठे। परमेश्वर को धन्यवाद दें! जब आपको लगा कि आपने उस परीक्षा में काफी अच्छा किया है, तो परमेश्वर की आराधना करें! जब आप अपने माता–पिता को आपस में लड़ते झगड़ते देखकर थक जाते हो और जब आप परमेश्वर से उन्हें शांति देने के लिए प्रार्थना करते हो, और तब वे तुरंत झगड़ना रोक देते हैं, तो परमेश्वर की आराधना करें! जब आप परमेश्वर से प्रार्थना करते हो कि वह आपको देखें और कलीसिया में सहायता करने के लिए आपको एक अवसर दें, और किसी कक्षा में अध्यापक आपको उनके सहायक के रूप में मदद के लिए चुनता है तब आप परमेश्वर की आराधना करें। जब आप परमेश्वर से प्रार्थना करते हो कि स्कूल में आपको परेशान करने वाले शरारती बच्चे से आपको बचाये, और तब वह शरारती बच्चा और उसका पूरा परिवार किसी और शहर में चला जाता है, तो परमेश्वर की आराधना करें! परमेश्वर की ओर से अलग अलग तरह की समस्याओं के लिए अलग अलग उत्तर मिलेंगे जिनका हम सामना करते हैं। परमेश्वर निरंतर हमारी सहायता करते रहते हैं और हमारा ध्यान रखते हैं, इसलिए हमें भी वैसी ही प्रतिक्रिया करनी चाहिए जैसा कि इस्त्राएलियों ने किया: परमेश्वर की आराधना करें!

खगोलीय निरीक्षण

[परमेश्वर अद्वैत है]